आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 3/सितंबर 2024
Received: 11/09/2024; Accepted: 15/09/2024; Published: 26/09/2024

रेत समाधि : ज़िंदगी और मौत का आख्यान

सुनीता कुमारी साव
सहायक प्राध्यापिका (हिंदी विभाग)
दार्जिलिंग गवर्नमेंट कॉलेज
मो: 8927898944
ईमेल: sunitakumarishaw23@gmail.com

सुनीता कुमारी साव, **रेत समाधि : ज़िंदगी और मौत का आख्यान**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 4/अंक 3/सितंबर 2024,(228-232)

समाधि वो अवस्था है जब मनुष्य अपने मन, बुद्धि, आत्मा एवं शरीर के साथ अपने आराध्य से पूरी तरह जुड़ जाता है। व्यक्ति और ईश्वर में बिल्कुल दूरी नहीं रह जाती। जो मनुष्य इस अवस्था को पा जाता है उसमें स्पर्श, गंध, भूख, प्यास, रूप, शब्द इन सभी की कोई परवाह नहीं रहती। वह अनिश्चित काल तक अपने आराध्य के साथ संबंध बनाकर रखता है। ऐसा इंसान जीवित रहते हुए भी अमर हो जाता है और जन्म और मृत्यु के फेर से पूरी तरह मुक्त होकर मोक्ष की प्राप्ति कर लेता है और किसी दूसरे लोक की यात्रा भी किन्तु यह समाधि चेतन अवस्था में ली जाती है और अपने साथ दार्शनिकता को लिए रहती है किन्तु रेत समाधि में 80 वर्षीय बुजुर्ग महिला को दर्शन और अध्यात्म के धरातल से अलग रखकर उसके अवचेतन मन में चलने वाले दबे-कुचले विचारों को पुनः जीवित करने की कथा को दर्शाया गया है। मरना केवल साँसों के रुकने का ही नाम नहीं बल्कि इच्छा के मरने का भी होता है जब अम्मा अपनी उम्र के अंतिम पड़ाव में होती है तो भी अपनी इच्छाओं को मरने नहीं देती और यही कारण है कि पुलिस की गोली खाकर मर कर भी नहीं मरती। "मौत का अंत मानने वालों ने इसे अंत माना पर जो जानते थे कि अंत-वंत नहीं होता है ये, एक और सरहद लाँघ गई है वह।"1

अब सवाल उठता है कि कोई समाधि कब लेता है, क्यों लेता है और यह सवाल तब और अधिक महत्वपूर्ण बन जाता है जबकि वह कोई गृहस्थ व्यक्ति हो और उसके द्वारा ली गई समाधि अन्य समाधियों से बिल्कुल ही अलग हो। रेत समाधि किसी दार्शनिक धरातल पर लिखा गया न कोई उपन्यास हैं और न ही इसके पात्र किसी दर्शन को ही प्रतिपादित करते हैं किन्तु उपन्यास की मूल पात्र चन्दा रेत की तरह हाथ से निकले हुए

समय के अतीत में जाकर उसे फिर से जीना चाहती है, जर्जर हो रहे बूढ़े शरीर को भूलकर पुनः एक बच्ची बन जाते हुए समय यात्रा पर निकल पड़ती है। जिस पल को उसने ठीक से जिया ही नहीं था उसका आनंद

1

लेने। "सुराख का तरीका है जितना भीतर जाओ उतना वो खुलता जाए। कीड़ी सी साँसे छेनी बनी, अपनी ही घुटन को फलांगने में सरंध्र बना रही है कि अंधेरा चिरे, रोशनी दिखे, झोका मिले।"2

रिश्तों के ताने-बाने में बुना यह उपन्यास कई मुद्दों और विषयों के बारे में जिक्र करता है। भारत-पाक विभाजन से लेकर पर्यावरण प्रदूषण, किन्नर, नारी स्वतंत्रता एवं भारत स्वच्छता अभियान भी लेखिका की दृष्टि से बच नहीं पाए, किन्तु मूल कथा तीन महिलाओं को ही केंद्रित कर रची गई है एवं उनके द्वारा लिए गए निर्णयों एवं अपनी इच्छानुसार जीवन व्यतीत करने के तरीकों पर भी लेखिका ने अपनी कलम चलाई है। देश विभाजन और दो प्रेमियों के बिछड़ जाने की कथा को रेत समाधि में बड़े ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। कुछ अंशों में यह एक मनोविश्लेषणात्मक, संवेदनात्मक कथा भी है। एक कथा के भीतर से दूसरी कथा उत्पन्न होती जाती है जहां पाठक के लिए यह किसी फेंटेसी से कम नहीं। भाषा की बात की जाए तो हम देखते हैं कि आरंभिक अंशों की भाषा समझ से परे होती है किन्तु जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते जाते हैं तो कथा समझ में आने लगती है। शब्दों से चिपके रहेंगे तो किसी भी कृति को पढ़ नहीं पाएंगे। ज्यों अवचेतन मन के विचारों में कोई सामंजस्य नहीं दिखाई पड़ता ठीक उसी प्रकार लेखिका के द्वारा लिखे बहुत से अंश भी सर के ऊपर से निकल जाते हैं। जो कुछ अंशों में उबाऊ से लगने लगते हैं। पर हमें यह भी नहीं भूलना होगा कि यह उपन्यास किसी एक व्यक्ति को केंद्र में रखकर नहीं लिखी गई है बल्कि यह उन समस्त लोगों के मन में चले रहे उन विचारों को भी प्रतिबिंबित करता है जिन्हें वो न ही व्यक्त कर पाते हैं और न ही जी पाते हैं। कथा वाचक एक अदृश्य वक्ता की तरह कहीं भी, कभी भी आ धमकता है और मूल कथा की ओर ध्यान केंद्रित करते हुए चुपचाप प्रस्थान भी कर लेता है। भाषा बिल्कुल एक नदी के प्रवाह की तरह बहे जा रही है। नदी के मार्ग में जो भी आ रहा है सब जल में दिख रहा है। अगर हम उसे चुनने लगे तो बहते हुए नदी के आनंद से वंचित हो जाएंगे। पाठक को भाषा की भूलभुलैया से स्वयं को बचाते हुए मूल पाठ पर ही ध्यान देना होगा।

रेत समाधि को पढ़ना किसी पुस्तक को पढ़ना नहीं बल्कि उस व्यक्ति के अवचेतन मन को पढ़ना है जिसे वो सबके सामने खोल नहीं पाता, खुल कर जी नहीं पाता और न ही किसी को बोल पाता कि वो क्या है और लोग उसे क्या समझ रहे हैं। पारिवारिक जिम्मेदारियों का ईमानदारीपूर्वक निर्वाह करने वाली चन्दा हो या उसकी स्वच्छंद विचारों वाली पुत्री या रोजी बुआ या कोई भी अन्य व्यक्ति ज्यों ही परिवार या समाज द्वारा निर्धारित तयशुदा मापदंडों से बाहर निकलने की कोशिश करता है त्यों ही सभी को यह नागवार लगने लगती है। स्त्री किरदारों और उनकी संवेदनाओं के बहाने समाज, मजहब, सत्ता सब की संवेदनहीनता को उजागर

2

करती हुई इस पुस्तक ने एक तरह से आमजन की बेचैनी और छटपटाहट को भी बखूबी रखा। "बहरतौर कहानी का अंग यह बना कि गोली आई थी पर तब तक माँ मनमाफिक गिरने की माहिर हो चुकी थी।"3

रेत समाधि को समझने के लिए भाषा को अनदेखा करना ही पड़ेगा विशेषकर आरंभिक अंशों को जहाँ उपन्यास को पढ़कर लगता है कि क्या बेसिर-पैर की बात हो रही है किन्तु ज्यों-ज्यों हम आगे बढ़ते जाते हैं त्यों-त्यों बूढ़ी अम्मा के वार्तालाप और हरकते समझ आने लगती हैं। आज भी हमारे समाज, आस-पड़ोस में न जाने कितनी ऐसी महिलाएं होंगी जो अतीत को आज भी जीना चाहती हैं किन्तु घर, परिवार और तमाम तरह की जिम्मेददारियों से जकड़ी वे उन्हें भूलना ही ठीक समझती हैं या भूलना उनकी मजबूरी रही हो किन्तु जब जीवन के एक पड़ाव में आकर जहाँ अपना बचा-खुचा जीवन बच्चों, नाती-पोतों के साथ बिताने की होती है वहीं अम्मा अपने युवा अवस्था को जीना चाहती हैं। कमोवेश यह उनके मन की व्यथा रही हों जो वे पुरा न कर सकी हों और अंदर ही अंदर उनके जीवन को खा रही हों। यही कारण है कि वे पीठ के बल गिरने के प्रयास में कहीं अपने पूर्व प्रेमी (पति) को किसी कारणवश पीठ दिखाना पड़ा हो या देश छोड़कर आने का यह भाव रहा हो कि अब वह पीठ नहीं दिखायेंगी और प्रत्येक परिस्थिति का डटकर सामना करेंगी, यह सोचकर ही वे गोली खाकर भी पीठ के बल गिरती हैं और मरते हुए भी उन स्मृतियों को याद करती हुई उन्हें अपने मानस-पटल पर जीवंत बनाए रखती हैं। "उनकी दलीलें न समझ पाने वाले उसे पागल मान बैठे या शायद शातिर। कि जानसमझ के बरगला रही हैं . . उन्होंने ठहाका लगाया कि जो करो वो ही सीमा पार, तो कुछ करे ही नहीं?"4

यहाँ औरतों की स्थिति को दर्शाया गया है। खाने से लेकर उनके जीवन से जुड़े तमाम मुद्दे जो महिलाएं करना चाहती थी पर पुरुष वर्ग को हमेशा वह नागवार ही लगता था, ऐसा करना जैसा कि उन्होंने कोई जुर्म किया हो, सीमा-पार करने जैसा कोई अवैध जुर्म। "सिकुड़ी गठरी सी, पल दर पल और सिकुड़ती हुई . . अपनी अस्सी से कुछ कम की ताकत इसी में लगा दे कि कैसे दीवार में घुस सके।"5 यह दीवार में घुसने की प्रक्रिया कहीं बार्डर के कंटीले तारों से स्वयं को निकालने का प्रयास तो नहीं कर रही थी अम्मा अपने अवचेतन मन में कि जब मौका मिला वे दीवार को ही धकेल रही हैं ताकि सही समय आने पर वे इस मौके से न चूके।

गीतांजलि श्री के उपन्यास की मूल कथा तो बूढ़ी अम्मा का सरहद पार करना है किन्तु इसके भीतर न जाने कितनी अनछुई तमाम कथाएं भी छिपी हुई हैं जो एक महिला के स्वतंत्र

एवं खुल कर लिए गए निर्णयों पर भी प्रश्न खड़े करती हैं जिनके दबाव के आगे वे झुक जाती हैं या जीवन के किसी पड़ाव पर जब उन्हें लगता है कि उनकी बाकी की ज़िंदगी बड़ी बेमानी रही तो वे प्रतिकार करने पर आमादा हो जाती हैं चाहे वह खुलकर विरोध करना हो या बूढ़ी अम्मा की एक ज़िद कि अब नहीं उठना है जिसे केवल अम्मा ही समझ सकती हैं और दूसरा कोई नहीं। औरों के लिए यह एक बेतुका बचकाना और पागलपन के लक्षण हो सकते हैं लेकिन सिग्मंड फ्रायड के दृष्टि से देखे तो अम्मा का यह बर्ताव बिल्कुल अनुचित नहीं था। आज वर्षों के बाद उन्हें स्वयं को सही साबित करने का मौका मिला तो वे पूरी निष्ठा के साथ पालन करने में लग गयीं। अब वे पूर्ण रूप से मुक्त थी पति से भी और अपनी जिम्मेदारियों से भी। पर प्रश्न यह है कि कितनों को यह मौका मिलता है। बूढ़ी अम्मा तो मरकर भी समाधि ले ली किन्तु कितने ही ऐसे हैं जो जी तो रहे हैं किन्तु अंदर से मृत हैं।

रिफ़्यूजी फिल्म का एक गीत था- 'पंछी, नदियां पवन के झोंके कोई सरहद न इन्हें रोके . . ' लेकिन मनुष्यों पर यह बात लागू नहीं होती उन्हें भौगोलिक सरहद से लेकर मानव समाज द्वारा निर्धारित हर प्रकार की वर्जनाओं को पार करना किसी सरहद को पार करने जैसा ही दंडनीय और अक्षम्य अपराध है। हालांकि बहुत से लेखकों ने विभाजन की पीड़ा को अपने लेखन का विषय-वस्तु बनाया है किन्तु गीतांजलि श्री ने अपने उपन्यास रेत समाधि में मुख्य कथा को रखा ही साथ ही एक नारी मन और उसपर थोपी गई वर्जनाओं को बड़े ही सुंदर ढंग से उकेरा है। एक सामान्य पाठक के रूप में इस उपन्यास को पढ़कर कहीं से भी नहीं लगता कि इस उपन्यास में किसी समाधि की बात कही गई है जो कि पूर्ण रूप से एक आध्यात्मिक पक्ष है। किन्तु ज्यों-ज्यों इसके गहरे उतरते जाएंगे तो समझ आने लगेगा कि किस तरह लेखिका ने अम्मा के मन में चलने वाले अव्यक्त भावनाओं को व्यक्त करने में सफल हुई है जो उनके बच्चों की समझ से परे था। आज हमारे समाज में कितने ही ऐसे पात्र हैं जिनकी अव्यक्त इच्छाएं हैं जिसे वे पूरी न कर सके, किन्तु अम्मा इसमें सफल रहीं।

गौरैया के रूप में जिस स्त्री को दिखाया गया है वो स्वतंत्र थी और खुश भी किन्तु उसका स्वतंत्र रहना पितृसत्तात्मक मानसिकता को गँवारा नहीं होता और वह उसकी गोली का शिकार बनती है। वे स्त्री को स्वतंत्र नहीं देखना चाहते। समय बदला, समाज बदले उनकी सुरक्षा के लिए कानून भी बने लेकिन डर अभी भी उनके मन में घर कर गया है। उनकी स्वतंत्रता को गलत ही समझा गया। उनकी स्वतंत्रता केवल नकारात्मक रूप में ही देखी जाती है जबकि इसका दूसरा रूप स्त्री के सपनों, आकांक्षाओं को पूरा करने से भी है जो परिस्थितिवश या किसी अन्य कारणों से अधूरा रह गया और उनको पूरा न करने देना उम्र, लिंग या केवल

मात्र स्त्री होने के कारण। इस उपन्यास की पात्र इन सारी नियमों को धत्ता देती हुई न केवल बाहर निकलती हैं बल्कि उसकी प्राप्ति के लिए अपने जीवन और अन्य सुविधाओं को भी दांव पर लगा देती हैं। "कौन नहीं जानता कि जग भर में गौरैया निडर घूमती घुसती रहती है।"6

लड़की पैदा नहीं होती लड़की बनाई जाती है। 'द सेकेंड सेक्स' सिमोन द बोउआर की बात को ही चरितार्थ करती है कि औरत की नियति समाज की निर्धारित मान्यताओं से होता है न कि स्वयं स्त्री की इच्छाओं के अनुसार। यह इच्छाएं किसी समय तक ही उचित प्रतीत होती हैं और ढलती आयु के साथ इच्छाओं को भी जीवित रहने का अधिकार समाज, परिवार को सही नहीं लगता परंतु वे भूल जाते हैं कि इंसान का शरीर मरता है उनकी सुप्त इच्छाएं नहीं। जो किसी कारणवश पूरी नहीं हो पाई थी और यही एक कारण रहा है कि अम्मा पारिवारिक जिम्मेदारियों से मुक्त होते ही अपने पुराने प्रेमी को याद करते हुए पाकिस्तान जाने का निर्णय करती है और वो भी बिना किसी को बताए। "एक दिन मरने के लिए हजारों दिन जीना पड़ता है।"7 रोजी बुआ के यह विचार उनके खुले विचारों को ही दर्शाते हैं जिसकी संगत से अम्मा में अचानक एक बड़ा बदलाव आता है किन्तु यह जीना कुंठित होकर जीना नहीं बल्कि अपनी सारी सुप्त इच्छाओं को पूरा करते हुए जीना और जब लगे कि अब मन में कोई इच्छा नहीं बची तो मौत का वरण भी एक खुले हृदय से करना और कमोवेश यही कारण रहा होगा कि अम्मा पीठ पर गोली खाकर भी मुंह के बल न गिरकर खुले आसमान की ओर मुंह करती हुई अपने इहलीला समाप्त करती हैं। लेखिका ने कहीं भी यह स्पष्ट नहीं किया कि अम्मा पीठ के बल ही क्यों गिरने का

अभ्यास करती हैं। शायद अपने पूर्व पति को पीठ न दिखाने के रूप में भी हो सकता है किन्तु उपन्यास में इसे स्पष्ट नहीं किया गया है।

संदर्भ-सूची-

1. श्री गीतांजलि, रेत समाधि, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, छठा संस्करण- 2022, पृष्ठ-11
2. वही, पृष्ठ- 52
3. वही, पृष्ठ- 10
4. वही, पृष्ठ- 10
5. वही, पृष्ठ- 11
6. वही, पृष्ठ-72
7. वही, पृष्ठ- 204

****